बी॰ए॰ भाग-3
हिन्दी - प्रतिष्ठा
पेपर - 8
'गोस्वामी तुलसीदास'

रमेश कुमार यादव
हिन्दी विभाग, डी.के.कॉलेज
डुमराँव बक्सर

तुलसीदास की प्रमुख काव्य पंक्तियाँ।

हिय निर्गुन नयनन्हि सगुन, रसना राम सुनाम।
मनहुँ परट-संपुट लसत, तुलसी ललित ललाम॥

एक भरोसो एक बल एक आस बिस्वास।
एक राम घन श्याम हित चातक तुलसीदास॥

साखी सबदी दोहरा, कहि किहनी उपखान।
भगति निरूपहि भगत कलि निंदहि बेद पुरान॥

का भाखा का संस्कृत प्रेम चाहिए साँचु।
का जुआवै कामरी का लै करी कमाचु॥
दोहावली से।

गोरख जगायो जोगु, भगति भगायो लोगु।
निगम नियोगते, सो केलि ही छरो सो है॥

धूत कहौ अवधूत कहौ, रजपूत कहौ जुलाहा कहौ कोऊ।
काहू की बेटी सौ बेटा न ब्याहब काहू की जाति बिगार न सोऊ।

खेती न किसान को भिखारी को न भीख भली।

माँगी के खइबो मसीत को सोइबो,
लेबे को एक न देबे को दोऊ॥

आगि बड़वागि ते बड़ी है आगि पेट की

अवधेस के द्वारे सकारें गई
सुत गोद के भूपति लै निकसे।

पुरतें निकसी रघुबीर बधू धरि चीर दए मग मेंड्गदै॥

बालधी बिसालबिकराल, जवाल जाल मानो,
लंक लीलिबे को काल रसना पसारी है॥

झूठो है, झूठो है, झूठो सदा जुग,
संत कहंत जे अंतु लहा है।

मातु-पिता जग जाइ तज्यो बिधि हूँ न
लिखी कछु भाल भलाई॥

अंतर जामिहुतें बड़े बाहिरजामि हैं राम जे नाम लियेतें।

लालची ललात, बिललात द्वार-द्वार दीन
बदन मलीन, मन मिटै ना बिसूरना॥

आश्रम-बरन कलि बिबस बिकल भए
निज-निज मरजाद मोटरी-सी डार दी॥

कवितावली से

अबलौं नसानी, अब न नसैहौं।
राम कृपा भव निसा सिरानी, जागे फिरि न डसैहौं॥

ऐसो को उदार जग माहीं।
बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर राम सरिस कोउ नाहीं॥

कबहुँक अंब, अवसर पाइ।
मेरिऔ सुधि द्याइबी कछु करुन कथा चलाइ॥

केसव! कहि न जाइ का कहिये।
सून्य भीति पर चित्र रंग नहि, तनु बिनु लिखा चितेरे॥

जाके प्रिय न राम बैदेही।
तजिये ताहि कोटि बैरी सम, जद्यपि परम सनेही॥

माधव! मो समान जग माहीं।
सब बिधि हीन, मलीन, दीन अति, लीन-बिषय कोउ नाहीं

श्रीराम चन्द्र कृपालु भजु मन हरण भय भव दारुणं॥

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट- प्रोफेसर
डी. के. कालेज डुमरॉव
बक्सर बिहार